Since 2014

TAPYS TALK

(Self-managed by Students)

TO LEARN TO SERVE* TO EXCEL*

TIHS, SAGUNA MORE, CANTT RAOD, KHAGAUL, DANAPUR, PATNA

Date:- 15/09/2023, Page 1

Editorial Board

B.Ed. (2023-25)

1. Mrityunjay Kumar, Roll No. – 07
2. Aastha Singh, Roll No. – 11
3. Shivam Kumar Singh, Roll No. - 14
4. Riya Pandey, Roll No. - 27
5. Santosh Kumar, Roll No. - 41
6. Ayesha Ahmad, Roll No. - 95

Message from the Chief Editor

Congratulation to class of 2023-25 for their 1st initiative in enhancing & improving upon the work of their seniors, maintaining the legacy. Welcome all of you on board to TAPYS.

Abineshwar Singh
Director (TIHS & MSIE)

Message from the Editorial Board

Namaste

"Excited to have this opportunity to create an impact.
Looking forward to collaborating with everyone and creating great content together. "Words shape worlds. Wright boldly." Let's make this tapys shine!

Tapys Talk

Decades of research show that in a developed area like our college campus, even moderate shade from trees will benefit air quality, reducing the brutal heat of summer. By emphasizing tree plantation in college, we nurture a sense of environmental responsibility in us.
"Don't make trees rare,
Keep them with care"

■ Riya Pandey, Roll no-27,
Session-2023-25

Positive Approach

Teary eyes and face with a frown;
I was sitting alone at the beach.
Looking at the sand light brown;
Thinking about my life and breach.
Looking at a boy running around;
playing with his dog I found.
Sitting beside me he said;
your face so sad what made?
Stupid situations of my life;
feels like killing them with a knife.
He said look around for a while;
There is so much for you to smile.
Look at the wonderful balloon;
They say not every day is a bright boon,
Grey days will one day get a use.
Waves tell you to never stop;
Life is like a beautiful broach one day you will reach the top;
just wear it with a positive approach.

- Ayesha Ahmad, B.Ed.
Roll No.-95,
Session:- 2023-25

National Development

If we want to be a developed country or developed nation, then we will have to invest capital in human resource or human development. If nation/ country provides good education, health care facility and training for their people, then they become human capital and earn more than his/her Expectations. This increases the GDP of our country. The countries, like Japan have invested in human resource. These countries are prosperous and developed.

Our country also needs a lot of attention on human resource. Only then our country will be developed nation.
Please use human beings as a resource.
Thank You

- Rakesh Kumar, Roll No-70,
B.Ed., Session:- 2023-25

Some Interesting Unknown Facts

- Like fingerprints, every ones tongue prints are different.
- The electric chair was invented by a dentist.
- Most lipsticks contain fish scales.
- People say "Bless you when you sneeze because when you sneeze heart stops for a second".
- Sea starfish have no brains.

– Shruti Singh Roll No. – 80,
B.Ed Session: – 2023-2025

प्रिय सरकारी नौकरी,

आशा करता हूँ आप सकुशल होंगी। आपको शत् – शत् नमन है। आपके बिना जिंदगी वीरान सी हो गई है। जहॉ कहीं भी जाता हूँ लोग आपके नाम का टैग लगा बार –बार जलील करते हैं कब तुम्हारी नौकरी होगी? कब तक पढ़ते रहोगे? ये सब ताना सुन–सुन कर अब मुझे जिंदगी से नफरत सी होने लगी है। अब तो घर वाले भी सवाल करते हैं कब तक पढ़ते रहोगे, कब तक तुम्हारा खर्चा उठाते रहेंगे ? हमेशा अकेले में यही सोचता हूँ हे सरकारी नौकरी! कब तुम मेरी जिदंगी में आओगी। ऐसा नहीं कि मैंने तुम्हें पाने की कोशिश नहीं की। आज भी मुझे याद है, एक छोटा सा कमरा जिसमें न कोई खिड़कियाँ न कोई बाहर का प्रकाश, उसी में पढ़ाई करना, खाना–पीना, सोना। मैं तुम्हे पाने के लिए दिन–रात पागलों की तरह मेहनत करता रहा। पुस्तकालय में 10–10 घंटे पागलों की तरह पढ़ता रहा। हमारी जिंदगी में आज तक न ब्रेक फास्ट,ना लंच,ना डिनर हुआ। बस जीने के लिए खाया करता, कुछ भी रूखा–सूखा। परंतु तुमने मेरा कभी साथ नहीं दिया। कभी किसी परीक्षा में चेंज हुआ तो मुख्य परीक्षा नहीं। कभी मुख्य परीक्षा हुई तो फाइनल लिस्ट में नाम नहीं। तुमने हमेशा मेरे साथ बगावत किया। तुम क्या समझ पाओगे हम किस तरह से तुम्हारे बिना जिंदगी गुजार रहे हैं। अपने सभी शौक को अंदर– अंदर ही पी जाते है। घर में माता– पिता भी इसी आशा में है कि कब सरकारी नौकरी होगी? वे लोग इसी बात को सोचकर काफी तानव में रहते हैं। और तो और मैं जिस समाज में रहता हूँ वहाँ तुम नहीं मिली तो समझो जिंदगी में कुछ हासिल नहीं किया। तुम क्या जानो एक बेरोजगार की जिंदगी का सबसे बड़ा तोहफा होती है "सरकारी नौकरी"। घर पर बोझ बन गया हूँ मैं। अब गॉव भी जाना मुश्किल लगता है। मुझे बस तुम्हारी जरूरत है। मैं तो अब ऐसा हो गया हूँ कि घर भी अब किस्तों मे आता हूँ, कभी किसी काम के बहाने, कभी किसी त्योहार के बहाने चले जाते हैं। हम अपने हिस्से का अपनापन ढूँढ़ने! वैसे भी जो लोग बेरोजगार होते हैं न साहेब! उनके नसीब में घर कहाँ आता है? तुम मेरी जिंदगी में नहीं हो तो ना समाज में इज्जत, ना परिवार में। ऐसा मानो तुम जिंदगी में हो तो जिंदगी में सब कुछ है। तुम्हारे बारे में जितना लिखूँ उतना कम है। इसलिए जल्द–से जल्द मेरी जिदगी में आ जाओ प्रिय!

रोज टूटता हूँ, रोज ही बिखरता हूँ
मै बेरोजगार हूँ साहेब,
अपनों के तानों से रोज जूझता हूँ।

:– मृत्युंजय कुमार, क्रमांक–07, बी.एड.सत्रः–2023–25

क्या लिखूँ

कॉलेज मैग़ज़ीन छप रही है।
मिला मुझे समाचार,
सोचा मै भी लिख डालूँ
अर्टिकल दो–चार।
कविता लिखूँ, या फिर कोई लेख,
इसी सोच में बैठी रही मैं,
सिर तकिए पर टेक।
पूछा, मम्मी विषय बताओ, या बताओ कोई प्रसंग,
जिसे पढ़े मजे से सब, और रह जाए दंग।
इन्हीं विचारों में खोकर,दिमाग खाली होने लगा।
तब टूटे–फूटे शब्दों में, कविता लिख डाली!

- Aysha Ahmad
Session:- 2023-25

.....

तपिंदु इन्स्टीच्यूट ऑफ हायर स्टडीज, जिसकी स्थापना 2007 में हुई थी। यह संस्थान अत्याधुनिक बुनियादी ढ़ाँचे वाला है, गुणवत्ता और उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है। संस्थान, प्रशासन प्रबंधन, कम्प्यूटर विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी, तथा शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में अवसर प्रदान करती है। इसके अलावा संस्थान अपने शिक्षार्थियों को वैश्विक स्तर पर अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बनाने का प्रयास करता है और इस तरह उन्हें देश का गौरवान्वित नागरिक भी बनाता है।

संस्थान, संबंधित क्षेत्रों में विभिन्न सेमिनार और कार्यशालाएँ आयोजित करता है।

तपिंदु इंस्टीच्यूट ऑफ हायर स्टडीज एक अभिनव शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए उत्कृष्ट सुविधाएँ प्रदान करता है।

हकदार

अपनी आबादी के तीन चौथाई से भी अधिक अगड़ों के लड़के/लडकियाँ आर्थिक रूप से कमजोर होने का सर्टिफिकेट लेने की होड़ में है। यह भी सही है कि इनमें अधिकतर बच्चे आर्थिक मानकों पर कमजोर परिवारों से आते है और यह भी देखा जा रहा है कि डेढ़ लाख की बाइक से फिर चमचमाती कार से उतर कर लोग सर्टिफिकेट पाने की लाइन में लग रहे है।
अखबार में पढ़ा था कि 8 लाख रूपये वार्षिक आमदनी की सीमा है आरक्षण की इस पात्रता को पाने के लिये। यानी हिसाब लगाए तो करीब 67 हजार महीने। अब, इस गरीब देश में अगड़े हों या पिछड़े, 67 हजार रूपये प्रति महीने पाने वाले कितने लोग है? जो व्यवसाय से या खेती से इससे अधिक कमा लेते है, उनमें से भी अधिकांश लोग आसानी से अपनी आमदनी को कम दर्शा कर अपने बच्चों को इस कानून के मुताबिक " आर्थिक रूप से कमजोर" साबित कर लेगे। कर ही रहे हैं। अपने देश में अपने अनुसार सर्टिफिकेट बनवाना कोई बहुत कठिन भी नहीं और यह तो बिहार है भैया, आपलोग जानते ही हो।
प्राइवेट नौकरियों में मिलने वाले वेतन के स्तर का हाल तो यह है कि कई गांवो को मिला कर तलाशें तो पांच–सात ऐसे मिल पाएँगे मे जो बाहर किसी शहर में 67 हजार से अधिक वेतन पाते हों। यानी 90–95 प्रतिशत प्राइवेट नौकरी करने वाले इन मानकों पर आर्थिक रूप से कमजोर है।
बात रही सरकारी नौकरी की, तो इसमें भी अधिकारी वर्ग को छोड़ तृतीय या चतुर्थ श्रेणी में शायद ही किसी विभाग में 67 हजार से अधिक वेतन हो। तो, इनके बच्चे भी उस सार्टिफिकेट के हकदार हैं। बिहार की स्कूली शिक्षा का भट्ठा तो बैठ ही गया, लाखों मास्टर साहब भी अनंत काल तक ईइब्ल्यूएस के मानकों के अनुसार गरीबी रेखा से नीचे गिने जाते रहेंगे।

इस तरह, अगड़ों की भी 80–85 प्रतिशत आबादी अब रिजर्वेशन पाने की हकदार है। जो सच मे बेहद गरीब है, ऐसे अगड़ों के बच्चों को इस रिजर्वेशन का कितना लाभ मिल पाएगा यह संदेह के घेरे में है। उनमें से अधिकतर वंचित रह जाएंगे।
हालंकि, सब खुश है, कुल मिला कर मामला यह बना कि चलो, सरकारी नौकरियों में अगड़ो के लिये 10 प्रतिशत ऐसी सीटें रिजर्व हो गई जिनमे कोई और झांक भी नही सकता। जैसा कि बहुत सारे ज्ञानी लोग बताते हैं या अनुमान लगाते है, देश की आबादी में अगड़ो की संख्या 15 प्रतिशत के करीब होगी। शायद 16–18 भी हो। तो, सौ में दस की गारंटी पाना थोड़ी बहुत आशा तो देती ही है, खास कर यह देखते हुए कि बदलते जमाने के साथ प्रतियोगिता परीक्षाओं की ऊपर की जनरल रैकिंग में आने वाले दलित–पिछड़ों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।
अब सबके लिये रिजर्वेशन है, सिवा ऐसे ऊपर जाति के लड़के लड़कियों के जिनके परिवार की आमदनी 67 हजार महीने से अधिक है।

ये उच्च आमदनी वाले अगड़ी जाति कौन है? क्या करते हैं? कहाँ रहते हैं?
जाहिर है, इनमें इंजीनियर है, अफसर हैं, प्रोफेसर है, डॉक्टर, प्रोफेशनल आदि है या फिर बड़े बिजनेस मैन टाइप के कुछ लोग है।

इस तरह के लोगों के अधिकतर बच्चे अब 'वेतन' नही,'पैकेज' की बातें करते हैं। वो बोलेंगे गुणवत्ता वाली शिक्षा, जो इस देश मे दुर्लभ भी है और दिनानुदिन खासी महंगी भी होती जा रही है, अभी ही हमारे कॉलेज में B.Ed का फॉर्म भरा जा रहा था जिसमे E.W.S,BC2,GENERAL सभी के लिए एक जैसा पैसा आखिर ऐसा क्यूँ! लेकिन इन सब साहेब टाइप के बच्चों को इन आरक्षण की बहस से अधिक मतलब नही। प्राइवेट नौकरियों में ऊंचे ओहदों पर इन्ही का एकछत्र वर्चस्व है और ये वैचारिक तौर पर निजीकरण के प्रबल वफादार बन कर उभरे हैं। ये कहते भी हैं और चाहते भी हैं कि रेलवे, बैंक सहित तमाम सरकारी प्रतिष्ठानों का निजीकरण हो, ताकि वे कारपोरेट संस्थान की शक्ल अख्तियार करें और फिर उनके बच्चे अच्छी और मंहगी शिक्षा ले कर इन संस्थानो में बिना आरक्षण और बिना अधिक प्रतियोगिता झेले ऊंचे पदो पर बने रहेंगे। आखिर बात वही हुई कि राजा का बेटा ही राजा बनेगा।

नीचे की 90 प्रतिशत आबादी आरक्षण, मंदिर, मस्जिद, अगड़ा, पिछड़ा, हिन्दू मुस्लिम, हिंदी, तमिल आदि के मसलों पर उलझती रहेगी, इससे भी नहीं होगा तो 'द काशमीर फाइल', 'द केरला स्टोरी' जैसे फिल्मों को टैक्स फ्री करके हमारा माथा उलझाए रखेंगे। माथा का गुर्दा व्यस्त रहेगा और ऊपर के लोग अवसरों को झटकते रहेंगे। इधर, इन सब विवादों से हमारी कारपोरेट परिवेश सरकारें संस्थानों की निजीकरण करती रहेंगी, सरकारी नौकरियां खत्म होती जांएगी। आर्थिक आधार पर 10 प्रतिशत आरक्षण को वैध ठहराने का 'सुप्रीम कोर्ट का फैसला' अब नए अध्यायों की शुरूआत करेगा। अब जब, बंधन टूटा ही तो उन नारों को नया जोश और उत्साह मिल गया जिनमें दुहराया जाता रहा है, जिसकी जितनी हो आबादी, उसकी उतनी भागीदारी"।"

सवाल उठेंगे। क्यों नहीं उठें? व्यवस्थित अध्ययन, न प्रामाणिक आंकड़ों का कोई आधार, बस राजनीतिक फायदे के लिये लिए गए निर्णय हैं।
सरकारें कानूनों में देश और समय के अनुरूप परिवर्तनों पर सोच विचार करती रही हैं,परिवर्त्तन होते भी रहे हैं। स्वाभाविक है, परिवर्त्तन अगर शाश्वत सत्य है तो जिंदगी और समाज के हर पहलू पर लागू होगा। लेकिन, आजकल जो लोग आरक्षण पर नए सिरे से सोच विचार की बातें उठा रहे हैं वे अपनी समाज दृष्टि के शिकार है या फिर किसी राजनीतिक दृष्टि से प्रेरित हैं।
मन ही मन यह सवाल घेरता है कि––– क्या सच में आर्थिक आधार पर यह आरक्षण संविधान की मूल भावनाओं के अनुरूप है?

- नीतीश कुमार,
क्रमांक–83, 2022–24

बच्चा समझ कर माफ करना

मन किया तो बैठ गई लिखने को,
जिसने लिखना सिखाया था उसी के बारे में लिखने को।
शब्द के जाल में उलझी – उलझी थी।
उसकी भी जिंदगी कहाँ सुलझी थी।
वक्त के हर पड़ाव पर जो इम्तांह देती थी,
अक्सर खुदा को भी जो रूला देती थी।
कभी पति, कभी परिवार तो कभी जो
बच्चों पर जिंदगी लुटा देती थी।
खुदा क्या है, इसकी कभी परवाह ना करती थी।
बहुत इच्छाएँ जिसने दबाई हों अपनों के लिए
अपनी ख्वाइशों की बली चढ़ाई हो
पता नहीं इतना कैसे कर लेती हो, माँ !
हम कुछ भी बोल देते हैं,
तुम सह लेती हो माँ
मेरी हर गलतियों को माफ करना
जानती हूँ नादान हूँ पर बच्चा समझ कर
माफ करना।

- Anjali Kumari, B.Ed.
Roll No.-24 Session:- 2023-25

Ode To The Child

The Child is the father, mother mentor of the man he gathers the whole language for him his mother tongue with all the shades of meaning in the first many years of his life when you hear a man speak.

He is speaking the tongue of his childhood when you hear a man lie he is lying on the innocence of his childhood.

- Sushma, B.Ed.
Roll No.-60, Session:- 2023-25

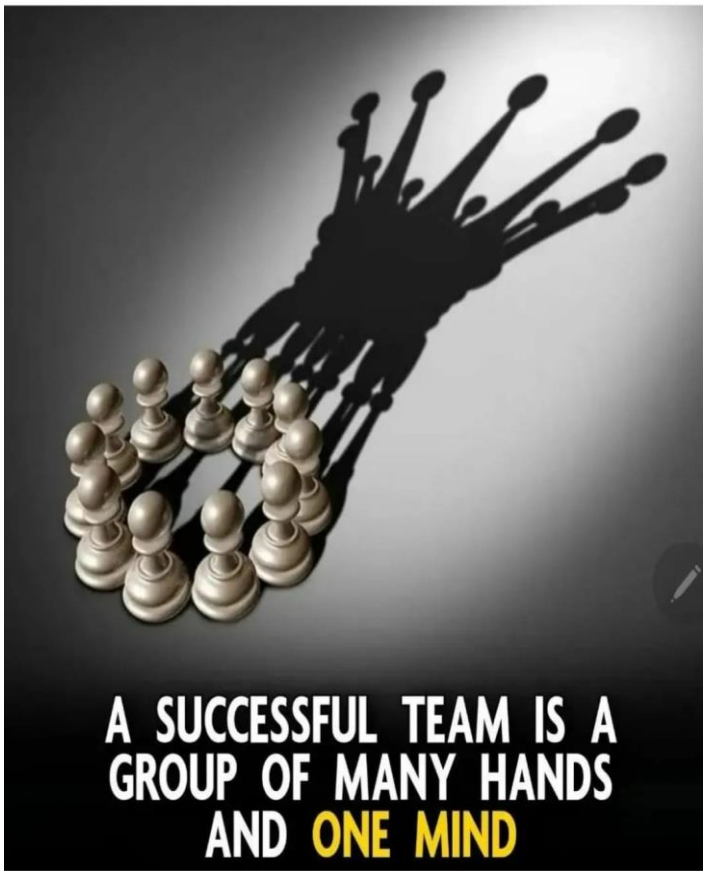

मेरी जिंदगी

लोग जल जाते हैं मेरी मुस्कान पर क्योंकि,
मैने कभी दर्द की नुमाइश नहीं की,
जिंदगी से जो मिला उसको कबूल किया,
किसी चीज की फरमाइश नहीं की,
मुश्किल है समझ पाना मुझे क्योंकि,
जब जहाँ जो मिला अपना लिया,
जो न मिला उसकी ख्वाहिश नहीं की।
माना की औरों के मुकाबले
कुछ ज्यादा पाया नहीं मैंने
पर खुश हूँ कि खुद को गिरा कर
कुछ उठाया नहीं मैने!

- सत्यम कुमार, बी.एड., (2023–25),
क्रमांक – 77

Department of B.P.Ed.

Admissions are open for B.P.Ed. Course Session (2023 – 25)
Ph:- 9693204648